SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 4, Issue-1, January to March : 2026
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

भारतीय ज्ञान परंपरा बहुमुखी तथा बहुआयामी

महादेवी गुरव
के.एल.ई संस्था.जी.आय.बागेवाडी, कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय निपानी

सारांश :

रूप में विभिन्न भाषाओं में विभिन्न संस्कृतियों में, साहित्य में इसका दृष्टांत होता है ।जैसे-कला, शिल्प , विज्ञान, संगीत,शास्त्रवगोलविज्ञान,वास्तु शास्त्र, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विभिन्न स्थानों पर राजाओं के कालरवंड में किल्ले में इसका प्रत्येय आता है।चार पावन वेद हमारी ज्ञान परंपरा का मूल स्त्रोत है। रामायण महाभारत भगवतगीता उपनिषदों में विस्तृत ज्ञान परंपरा विद्यमान है। शिल्प कला संस्कृति में हलेबीडुबेलूरु,हंपी का पत्थर से निर्मित रथ विश्वविख्यात हो गया है। आगरा का ताजमहल, विजयपुर का गोल गुम्बद,लाल किल्ला कुतुबमीनार,आदि।हिंद भाषा के संत साहित्य के शिरोमणि तुलसीदास , सूरदास, कबीरदास , मीराबाई, रैदास,केशवदास ,बिहारी , गौतमबुद्ध के मौलिक विचार बौद्ध दर्शन आदि ज्ञान, परंपरा का साहित्य योगदान के रूप में विराजमान हैं। तमिल साहित्य समृद्ध के रूप में विद्यमान है।कन्नड़ साहित्य के शिरोमणि बसवनन, के वचन साहित्य

त्अककमहादेवी के वचन साहित्य अललमप्रभू का वचन साहित्य मराठी में संत तुकाराम महाराज ,संत ज्ञानेश्वर ,संत सेना नावी, संत जनाबाई ,सोयराबाई ,संत मुक्ताबाई निवृत्ति नाथ सोपानदेव,तुकडोजी महाराज जी संत एकनाथ नामदेव ने "गुरु ग्रंथ साहिबा "की हिंदी में रचनाएं लिखी। आदि विभूतियों का योगदान से ज्ञान परंपरा को और भारतीय भाषाएं,भारतीय संस्कृति, साहित्य को, समृद्ध बनाया। मानव जीवन में सुधार किया। समाज में बदलाव किया।इन महान विभूतियों के बौद्धिक क्षमता के उच्चतम विचारों के स्रोत,माने जाते है , जो साहित्य आज भी अजरामर है प्रासंगिक है।,झो युग -युग से महान विभूति यों के योगदान से विभूषित होकर समाज में मानव समुदाय को मौलिक विचारों के जरिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर रहे है। यही ज्ञान परंपरा विभिन्न क्षेत्रों में "ज्ञान विरासत "के रूप में भारतभूमि में विभिन्न भाषाओं के माध्यम में पूरे विश्व की झांकी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विद्यमान है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारंभिक स्वरुप :

प्राचीन भारत में वेदों का अध्ययन करने के लिए प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का आधार तथा धार्मिक मूल्यों का विकास करने के उद्देश्य से विभिन्न संस्कृतियोंऔर भारतीय भाषा परिवार से प्राप्त ज्ञान परंपरा का साहित्य का बरवूबी से दृष्टांत होता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित शिक्षा भारत के भविष्य की आत्मा है। यह न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि चरित्र, विवेक और करुणा का निर्माण भी करती है। चुनौतियाँ अवश्य हैं, परंतु सही नीतियों, प्रशिक्षित शिक्षकों और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ भारत को ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर और वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

"आधुनिकता और परंपरा का समन्वय ही भारतीय शिक्षा की सच्ची क्रांति है।"

विदेशों से विद्वानों का आगमन होता था। नालंदा विश्वविद्यालय, तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय , काशी विश्वविद्यालय,उस समय प्रख्यात थे।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक इसकादृष्टांत होता हैं इसतरह भारतीय ज्ञान परंपरा विभिन्न भाषाओं में साहित्य में ज्ञान रूपी पावन गंगा के रूप में प्रवाहित हो रही है। हमारे लिए यह गौरव की बात है।

भारतीय मध्ययुगीन संत साहित्य का योगदान श्रेष्ठ माना जाता है । भारत की ज्ञान परंपरा आयुर्वेद , वनस्पति , विज्ञान ,भौतिक विज्ञान ,रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र,तथा चार वेदों में वर्णित हैं। पंचतत्व के आधार से ज्ञान परंपरा का दृष्टांत होता है। जैसे - "अथर्ववेद , सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद में, अग्नि, वायु,आकाश, जल, धरती का महत्वपूर्ण आवश्यकता का वर्णन किया है ।साथ, ही आध्यात्मिक ज्ञान परंपरा का साक्षात्कार होता है ।चार वेदों आमें वर्णित मानव जीवन तथा पंचतत्व का प्रतिपादन किया गया है ,वह सचमुच प्रकृति के एक - एक अंश का उपयोग और अस्तित्व का वर्णन किया गया है।

सूफी साहित्य की एक समृद्ध धारा ने भारत में दो संस्कृतियों को एकता शांति और समानता का संदेश दिया सूफी साहित्य ने एकेश्वरवाद का अनुकरण किया विश्वमे शांति स्थापित के लिए पूरी मानव जाति को किसी न किसी एक समान सूत्र का होना आवश्ययक है ह समान सूत्र वास्तव मे संतों ने एकेश्वरवादक रूप में स्वीकार कर लिया भौगोलिकता के कारण प्रथम मनुष्य जाति अनेक संघर्ष में जीवन से उच्च नीच काला गोरा ऐसे अनेक धर्म ,वर्ण,के आधार पर धर्मगुरू होने जो समाज में आडंबर मचा था अंधविश्वास अंध रूढ़ियों से व्याप्त था ऐसे अनेक संघर्ष में जीवन के पहलुओं को इन महान संतों अपनी सोच से मौलिक विचारों से मानव को ज्ञान का संदेश देकर अनेक भाषाओं विभिन्न धर्म ग्रंथो के आधार पर अभिव्यक्त किया गया है।सबका भगवान एक है ।राम रहीम के भेद को अपने मौलिक विचारों से अनेक पावन ग्रंथ के निर्माण से वेद-पुराण उपनिषदों आदि पावन ग्रंथों में रचना करके तुलसीदास कारामायण सूरदास का सूरसागर रचना करके तथा सूफी संतों ने एकेश्वरवादका निर्माण किया । सूफी और आगे मध्य युग के संत धारा ने इसी एक समान रूप को एक सूत्र बनाकर उसे एकेश्वरवाद में परिवर्तित किया वास्तव में विश्व शांति के ज्ञान प्रचार ने एकेश्वरवाद एक महत्वपूर्ण कदम रहा है "1

"संत काव्य में मानवजाति के आनंद विकास, , अरवंड ,शांति,औरउल्लास,की बात है। इसके "एकेश्वरवाद"ः की भावना ने सामाजिक भेदभाव, विभिन्नता तथा धार्मिक समानता की धारणा ने इस युग की दलित, सामान्य एवं पिछडी हुई जातियों में एक नई आशा का संचार कर दिया ।फलतः मनुष्य समाज की सामुहिक मनोवृत्ति का झुकाव क्रमशः लोकोन्मुख होता गया। " 2

सदाचार और मौलिक ज्ञान का भंडारसंत कबीर दास के दोहे में हमें दिखाई देते हैं।। उदात्त मानवीय संवेदना से अनुप्रणित होने के कारण संतों ने अपनी जाति की चिंता ग्रंथि को उरवाड फेंकने के लिए जिस शक्ति सौंदर्य तथा अदम्य साहस का परिचय दिया वह अभिनंदनीय है।" 3

कबीरदास जी ने अपने दोहे में धर्म के नाम पर अधर्म का कार्य करनेवाले लोगों पर कबीर ने टीका टिप्पणी की।जिसमें हिंसा के बारे में पशुओं की हत्या का विरोध करते हुए मांसाहार का विरोध करते हुए,यह दोहा कहते हैं -

" मास मास सब एक है,मुरगी ,हिरणी गाय।
आंरवदेरव जो रवात है ते, नर नरकहिजाय "।।
"पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़ ।
ताते चाकीभलि पीस रवाय संसार"।।

तीर्थ, मूर्ति पूजा, रोजा, नमाज़हज आदि बाहयांडंबरो का विरोध इन संतों ने किया है ।इससे उनका समाज सुधारक और मौलिक विचार विमर्श ज्ञान परंपरा का स्वरुपदिरवाई देता है।कबीरदास निराकार ब्रह्म के बारे में कहते है -

"अक्षय पुरुष एक पेड है, निरंजन बाकी बार ।
त्रिदेवा शाखा भरे पात भया संसार।"

कबीर के मानवता वादी विचार उच्च कोटि में आते हैं जैसे अच्छे संस्कारी लोगों के बारे में उनका यह दोहा अभिव्यक्त कर दिया है कि -

"संत ना छांड़ैसंतई जाय।
जो कोटिक मिले असंत ।
चंदन भुवंगबैठिया ,
तऊसीतलता न तजंता ।"

चंदन के पेड़ से सांप लिपटे हुए ,होते हुए भी चंदन अपना सुवास नहीं छोडता अपना अच्छे धर्म का पालन करता है ।प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय ज्ञान परंपरा विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत रूप में विद्यमान है।

हमें इस बात का नाज है कि ज्ञान परंपरा विभिन्न भाषाओं के साहित्य जैसे- कला, विज्ञान इतिहास राजनीति ,संस्कृति ,धार्मिक ,सर्व धर्म समभाव रखते हुए

कला क्षेत्र , में मनोरंजन क्षेत्र, में हस्त कला, शिल्प कला के माध्यम से विश्व विख्यात करिश्मा के रूप में हंपी बादामी हलेबीडुबेलुरु, आग्रा का ताजमहल, माउंटेनएवरेस्ट, महाराजाओं के किल्ले,दुर्ग,गोलगुमज, कुतुबमीनार,आदि विभूतियों के माध्यम से हमें बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष :-

ऐतिहासिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक विरासत में मिली बड़ी ज्ञान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ भंडार ही भारतभूमि है। विस्तृत ज्ञान परंपरा का साक्ष दर्शन बौद्ध साहित्य में जैन साहित्य में, विज्ञान,बौध्दिक, विभिन्न भाषाओं के माध्यम से साहित्यकारों के जरिए संतआध्यात्मिक ,साधक ऋषि मुनियों द्वारा,इसी तरह नृत्य कला शिल्प कला संगीत में भारतीय ज्ञान परंपरा उच्च कोटि की है। धर्म ग्रंथों में वर्णित ज्ञान परंपरा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, कला क्षेत्र में भी संतो का ज्ञान भारतीयों के लिए योगदान है।संतों का ज्ञान अभंग, दोहे ,पद , महाकाव्य में चित्रित है ।चिकित्सा का ज्ञान आयुर्वेदिक उपचार आज भी प्रासंगिक हैं।आम तौर पर भारतीय भाषाओं में

अनुवाद के क्षेत्र में ज्ञान की परंपरा पावन ग्रंथो के माध्यम से अस्त्र,शस्त्र,पूजा ,पाठ, तंत्र, मंत्र,यंत्र,आदि विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठतम सिद्ध हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ.आदित्यप्रचाडियामध्यकालीन हिन्दी संत कवियों की दार्शनिक ता पृष्ठ।- 56
- डॉ .पीतांबर दत्त पड़ताल, हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय , पृष्ठ -66
- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी उत्तर भारत की संत परंपरा, भूमिका पृष्ठ -5
- श्याम सुंदर दास, कबीर ग्रंथावली पृष्ठ -89
- वे.शा.सं. कृ.म.बापटशासत्री यजुर्वेद , ऋग्वेद का आधार पर